LOK SABHA

Thursday, December 9, 1965/Agrahayana 18, 1887 (Saka)—contd.

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock.

[MR. SPEAKER *in the Chair*]

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

Accumulation of Wealth by Dr. T. Saifuddin

+

*744. **Shri Kapur Singh:**
Shri Solanki:
Shri P. K. Deo:
Shri Narasimha Reddy:

Will the Minister of **Finance** be pleased to state:

(a) whether attention of the Government has been drawn to a news-item published in the *March of the Nation*, Weekly, dated the 19th September, 1965, page 4 to the effect that Dr. T. Saifuddin, head priest of the Dawoodi Bohras, has accumulated by unlawful means huge wealth;

(b) if so, whether Government have investigated into this affair; and

(c) if so, the details thereof?

The Deputy Minister in the Ministry of Finance (Shri Rameshwar Saha): (a) Yes, Sir.

(b) and (c). Investigations are in progress.

Shri Kapur Singh: Now that Dr. T. Saifuddin is no more amongst us, it is only under the compulsion of a public duty that I ask this supplementary.

I want to know whether there is evidence that this priestly family indulged in export of wealth in contravention of foreign exchange laws.

The Minister of Planning (Shri B. R. Bhagat): These matters are all under investigation. We cannot say definitely unless the investigation is complete.

Shri Kapur Singh: Is it within the knowledge of the Government that a huge proportion of the wealth of this family is invested outside the country, and if so, may I know whether this wealth is being subjected to the proper laws of taxation and estate duty of this country?

The Minister of Finance (Shri T. T. Krishnamachari): The position is that some allegations have been made and are being investigated. I cannot say anything more until I get the investigation report.

Shri Joachim Alva: There is considerable accumulation of wealth by His Highness the Aga Khan as well as by His Holiness the Chief Priest of the Bohra community.

Mr. Speaker: We would not travel beyond this Question.

Shri Joachim Alva: May I know whether Government have got a uniform policy with regard to accumulation of wealth in regard to taxation? Sometimes there have been cases where there has been tax evasion. I need not refer to the cases.

Shri T. T. Krishnamachari: If any information is forthcoming naturally we pursue it. If the information proves fruitful, then the law takes its own course.

Shri Bhagwat Jha Azad: Is it within the knowledge of the Government that the head of the Bohra community, who gets 8 per cent compulsorily of every Bohra's income as

religious tax, is investing a large part of his money not in this country, but outside, and may I know whether this wealth has been taken into consideration?

Shri T. T. Krishnamachari: As I said, the investigations are in progress. So far as my knowledge is concerned, it does not extend to that extent. I would await the investigation report.

श्री सिद्धेश्वर प्रसाद : अभी माननीय मन्त्री जी ने कहा है कि जांच कराई जा रही है। मैं जानना चाहता हूं कि कब से यह जांच कराई जा रही है और यह जांच का काम किस को सौंपा गया है ?

श्री ब० रा० भगत : यह इनकम टैक्स डिपार्टमेंट कर रहा है।

श्री यशपाल सिंह: जबकि भारत में गुरुडम है, गुरुआ कायम है और गुरु लोग हमेशा अपने चेलों से लेते हैं और यह हमारे भारत में जुर्म नहीं है, कामत साहब मेरे गुरु हैं, मैं उनकी हमेशा सेवा करता हूं . . .

अध्यक्ष महोदय : लेने पर एतराज नहीं हो रहा है। यह देने पर हो रहा है। यह कहा जा रहा है कि गुरु ले कर देते नहीं हैं।

श्री यशपाल सिंह : कितना इकट्ठा कर लिया है और इकट्ठा करने के बाद . . .

अध्यक्ष महोदय : इनकम टैक्स नहीं दिया है, सवाल उसका है।

श्री यशपाल सिंह : मैं जानना चाहता हूं कि इनकम टैक्स कब तक वसूल कर लिया जाएगा ?

अध्यक्ष महोदय : उसमें तो अभी वक्त लगेगा।

Shri Hari Vishnu Kamath: Is it not a fact that the Enforcement Branch or some other investigating agency of either the Home Ministry or the Finance Ministry raided the business premises or the residential premises of the person mentioned here last February and submitted a report to the Home Ministry making out a case for prosecution, and is it not a fact that the matter was not pursued further, if not hushed up, owing to ulterior considerations of a communal character which are out of place in a secular State?

Shri T. T. Krishnamachari: As I said, I am not in a position to answer the question. I will have to verify the facts before I say anything about it.

श्री हुकम चन्द कछवाय : मन्त्री महोदय ने कहा है कि जांच हो नहीं है। मैं जानना चाहता हूं कि डा० सैफुद्दीन का जितना धन है वह किन-किन देशों में है और उनके परिवार के किन-किन व्यक्तियों के नाम में है और कितना-कितना है ? उनसे कितना इनकम टैक्स लेना है ? क्या इन सब बातों की जांच की जा रही है? यदि हां, तो कब तक रिपोर्ट सामने आ जाएगी ?

श्री ब० रा० भगत : सब बातों की जांच कर रहे हैं, जो-जो शिकायतें आई हैं, उन सब की जांच हो रही है। रिपोर्ट कब आएगी, यह कहना तो मुश्किल है।

श्री हुकम चन्द कछवाय : एक साल, दो साल, कुछ समय तो बताया जाए।

अध्यक्ष महोदय : सारे संसार की जो तहकीकात करनी है तो फिर पता क्या चले।

Shrimati Savitri Nigam: May I know when this fact was brought to the notice of the government and why the government has allowed the accumulation of these big sums without realising proper taxes so far?

श्री ब० रा० भगत : इसकी खबर 18 सितम्बर, 1965 को एक अखबार में, एक वीकली में निकली थी, उसके बाद से।

Shrimati Vimla Deshmukh: Is the Government aware that Dr. Saifuddin has taken Rs. 16,000 pugree for letting

out a small room in one of the buildings belonging to the trust?

Mr. Speaker: That we cannot ask.

Shri D. C. Sharma: Since this accumulation has been going on from generation to generation may I know if the government will look into the accounts of this family not only for the current year but for all the years that have preceded so that they could find out how much of unaccounted money there is in the coffers of this gentleman?

Shri T. T. Krishnamachari: As I said before, some investigations are in progress. Many complaints that have been received are of a very general nature, and if after investigations we find some more detail this will be gone into.

Mr. Speaker: These questions will also be known to the investigation authorities.

महलनबीस समिति का प्रतिवेदन

+

*745. **श्री सिद्धेश्वर प्रसाद :**
श्री हेडा :
श्री विभूति मिश्र :
श्री न० प्र० यादव :
श्री बी० चं० शर्मा :

क्या वित्त मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या महलनबीस समिति ने राष्ट्रीय आय वितरण सम्बन्धी अपने प्रतिवेदन का दूसरा खण्ड प्रस्तुत कर दिया है ;

(ख) यदि हां, तो उसकी मुख्य बातें क्या हैं ; और

(ग) यदि नहीं, तो अप्रत्याशित विलम्ब के क्या कारण हैं ?

योजना मंत्री (श्री ब० रा० भगत) : (क) जी, नहीं ।

(ख) यह सवाल पैदा ही नहीं होता ।

(ग) चूंकि यह सवाल तकनीकी ढंग का है, जिसमें पेचीदा आंकड़ों की जांच-पड़ताल करनी पड़ती है, इसलिए समिति अभी तक अपना काम पूरा नहीं कर सकी है ।

श्री सिद्धेश्वर प्रसाद : पिछले अनेक सत्रों से बराबर इस सदन के सदस्य इस आशंका से, इस भावना से यह सवाल पूछते रहे हैं कि सरकार पर अनेक तरह के दबाव डाले जा रहे हैं जिसकी वजह से रिपोर्ट का दूसरा भाग प्रकाशित नहीं किया जाता है । मैं जानना चाहता हूं कि यह कहां तक सच है ?

श्री ब० रा० भगत : जी नहीं, प्रेशर्ज का गवर्नमेंट पर कोई सवाल नहीं उठता है ।

श्री सिद्धेश्वर प्रसाद : इस समिति की नियुक्ति 1960 में हुई थी । उस समय भूतपूर्व प्रधान मन्त्री जी ने यह कहा था कि राष्ट्रीय आय में जो वृद्धि हुई है उसका वितरण समान रूप से नहीं हुआ है । उसके बाद सरकार ने मोनोपली कमीशन की स्थापना की थी जिस की रिपोर्ट इस सदन के पटल पर रखी जा चुकी है । उस रिपोर्ट में यह बताया गया है कि इस बात में सन्देह के लिए कोई स्थान नहीं है कि आर्थिक क्षेत्र में एकाधिकार बढ़ता जा रहा है । ऐसी स्थिति में सरकार इस सम्बन्ध में क्या कदम उठाने जा रही है जिससे एकाधिकार समाप्त हो और आय का वितरण समान रूप से हो सके ?

श्री ब० रा० भगत : जहां तक आर्थिक मामलों में एकाधिकार का सवाल है, कमीशन ने रिपोर्ट दाखिल कर दी है और उस रिपोर्ट पर सरकार विचार करेगी । जहां तक इस समिति की रिपोर्ट का सवाल है, मैं माननीय सदस्यों की आशंकाओं से अवगत हूं । मैंने कमेटी के चेयरमन और उसके मेम्बरों को यह बात बताई भी है । यह भी मुझे मालूम है कि मैंने पिछली बार यह कहा था कि शायद इस साल के अन्त तक कोई आखिरी रिपोर्ट आ जाए । लेकिन मुझे आज यह कहते हुए दुख हो रहा है कि इस साल के आखिर तक वह रिपोर्ट